विद्यापति कवि गाते हैं- हे सुंदरी, अब उठकर आनंद उत्सव करो, तुम्हारे गुणवान स्वामी उचित समय पर अब घर आएँगे।

136

कौने गुने पहु परबस भेल सजनी,
बुझल तनिक मल मंद।
मनमथ मन मथ तनि बिनु सजनी,
देह दहए निसि चंद ॥२॥
कहओ पिसुन सत अवगुण सजनी,
~~मेटए न रेख परवान ॥४॥~~
उओ तनि सम मोहि नहि आन।
कतन जतन कए मेटिअ सजनी,
मेटए न रेख परवान ॥४॥
अनुभव रहु परभव सजनी,
हरिन न तेज हिमधाम ॥६॥
जइओ तरनि जल सोखए सजनी,
कमल न तेजए पॉक।
जे जन रतल जाहि सओ सजनी,
कि करत विहि भय बॉक ॥८॥
विद्यापति कवि गाओल सजनी।
रस बुझए रसमंत।
राजा सिवसिंह मन दए सजनी,
मोदवती देहु कंत ॥१०॥

१- हे सखी! किस गुण से मेरे स्वामी दूसरे के वश में हो गए? अब उनका गुण-अवगुण मैं समझ रही हूँ उनके बिना मन्मथ (कामदेव) मेरे मन को मथ रहा है। रात में चन्द्रमा मेरे शरीर को जलाता है।

२- उनके सम्बन्ध में चुगलखोर उनके सैकड़ो अवगुण भले ही कहें, किंतु मुझे उनके

ऐसा कोई अन्य नहीं है। कितने भी यत्न करके मिटावें, पर हे सखि, पत्थर पर पड़ी हुई रेखा कभी नहीं मिट सकती।

दुर्जन लोग यद्यपि कटु बोलते हैं (उनकी निंदा करते हैं) तथापि हे सखि, मेरे मन में वह नहीं ठहरता (उसपर मुझे विश्वास नहीं होता) (क्योंकि) राहु के द्वारा चन्द्रमा के पराभव (ग्रहण) के समय दुःख का अनुभव करके भी हरिण चन्द्रमा को नहीं छोड़ता। (यह पौराणिक कल्पना है कि चन्द्रमा में जो कलंक है वह हरिण की छाया है। और चन्द्रमा की गोद में ~~जो कलंक है~~ हरिण बसता है। इसी से चन्द्रमा का एक नाम मृगांक है।)

यद्यपि सूर्य जल को सोख लेता है, फिर भी कमल पंक को नहीं छोड़ता या पंक कमल को नहीं छोड़ता - जो व्यक्ति जिससे अनुरक्त होता है (जो जिससे सच्चा प्रेम करता है वह उससे प्रेम करता ही रहता है) विधाता, टेढ़ा होकर - रुष्ट होकर भी उसका क्या कर सकता है?

विद्यापति कवि इसे गा रहे हैं - वे कहते हैं कि मोदवती देवी के पति रसवंत राजा शिवसिंह मन देकर इस रस को समझते हैं।

बलराम कुमार

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी - विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज
ताजपुर - समस्तीपुर